ʿजीवराज जैन ग्रंथमालाका परिचय्र

< सोलापूर निवासी श्रीमान् स्व. ब्र. जीवराज गौतमचंद दोशी कई वर्षासे संसारसे उदासीन होकर धर्मकार्यमें वृत्ती लगाते रहे । सन १९४० में उनकी यह प्रबल इच्छा हो उठी की अपनी न्यायोपार्जित संपत्तीका उपयोग विशेषरुपसे धर्म और समाजकी उन्नतीके कार्यमें करे । तदनुसार उन्होने समस्त भारतका परिभ्रमण कर जैन विद्वानोंसे साक्षात् और लिखित संमतियां इस बातकी संग्रह की कि कौनसे कार्यमें संपत्तीका उपयोग किया जाय । स्फूट मतसंचय कर लेनेके पश्चात् सन १९४१ के ग्रीष्म कालमें ब्रह्यचारीजीने श्री सिध्दक्षेत्र गजपंथके पवित्र भूमीपर विद्वानोंकी समाज एकत्रित की और ऊहापोहपुर्वक निर्णयके लिए उक्त विषय प्रस्तुत किया । विद्वत् समेलनके फलस्वरुप ब्रह्यचारीजीने जैन संस्कृति तथा साहित्य के समस्त अंगोंके संरक्षण, उध्दार और प्रचारके हेतु ʿजैन संस्कृति संरक्षक संघ्र की स्थापना की और उसके लिए ३०००० तीस हजार रुपयोंके दानकी घोषणा कर दी । उनकी परिग्रह निवृत्ति बढती गई । सन १९४४ मे उन्होने लगभग २००००० दो लाख की अपनी संपूर्ण संपत्ति संघको ट्रस्टरुपसे अर्पण की । इसी संघ केअंतर्गत ʿजीवराज जैन ग्रंथमाल्र का संचलन हो रहा है । >

< आजतक इस ग्रंथमाला द्वारा हिंदी विभागमे करीब ४३ ग्रंथ तथा मराठी विभागमे ७७ ग्रंथ तथा धवला विभागमें १ से ८ भाग छप चुकेहै । आगेकेभाग क्रमश छप रहे है । >

< प्रस्तुत ग्रंथ ʿश्री श्रीमंत शेठ रायसाहेब सिताबराय लक्ष्मीचंद जैन साहित्योद्वारक सिध्दांत ग्रंथमालाक्रे द्वारा अधिकार प्राप्त ʿजीवराज जैन ग्रंथमालाका आठव्र पुष्प है । >

< निवेदक >

ʿरतनचंद सखाराम शह्र

< मंत्री >

ʿजैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापूर्र